आरती शुक्रवार की

आरती लक्ष्मण बालजती की,
असुर संहारन प्राणपति की ।
जगमग जोति अवधपुर राजै,
शेषाचल पे आप विराजै ।
घण्टा ताल पखावज बाजै,
कोटि देव मुनि आरती साजै ।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै,
तीन लोक जाकी शोभा राजै ।
कंचन थार कपूर सुहाई,
आरती करत सुमित्रा माई ।
आरती कीजै हरि की तैसी,
ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसी ।
प्रेम मगन होय आरती गावें,
बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवै ।
भक्ति हेतु लाड़ लड़ावै,
जन घनश्याम परम पद पावै ।

विवरण

असुरों (राक्षसों) का विनाश करने वाले तथा हमारे प्राणों की रक्षा करने वाले बालयति लक्ष्मणजी की आरती है । अवधपुरी नगरी दीपकों की ज्योति से चकाचौंध हो रही है, शेषांचल पर आप विराजमान हो रहें हैं । घण्टे , ताल एवं पखावज की ध्वनि से चारों ओर का वातावरण गूँजित हो रहा है, देवता एवं मुनि अनेक प्रकार से आपकी आरती कर रहें हैं ।

आपके मुकुट पर क्रीट तथा हाथों में धनुष धारण करने से तीनों लोकों की शोभा बढ़ रही है । सोने की थाल में कर्पूर जलाकर माता सुमित्रा

आपकी आरती कर रहीं हैं । हम भक्त गण लक्ष्मण जी की आरती उस तरह कर रहें हैं, जैसे ध्रुव, प्रहलाद, एवं विभीषण की आरती की जाती है ।

जो इनके प्रेम में भाव-विभोर होकर इनकी आरती करता है, वह वैकुण्ठ का वासी बनकर इस संसार में आने-जाने के क्रम से छुटकारा पा लेता है, अपने भक्तों के प्रति इनका अपार स्नेह रहता है तथा उनकी रक्षा के लिए ये युद्ध भी कर बैठते हैं, इनकी पूजा करने से हमें भगवान के चरणों के प्रेम की प्राप्ति होती है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.